The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research
An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 3 | March 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF: 5.6
Website: www.theacademic.in

भारतीय कृषि की आधुनिक समस्याएं एवं समाधान

डॉ0 अखिलेश कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, माधव विश्वविद्यालय पिंडवाड़ा सिरोही
अनीता सिंह
रिसर्च स्कॉलर, भूगोल विभाग, माधव विश्वविद्यालय राजस्थान

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.19581457

समस्त मानव जाति के जीवन का आधार है आधारभूत एवं अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कृषि विश्व के सभी देशों के लिए आवश्यक है! भारत वासियों की अस्तित्व का विकास का संबंध कृषि क्षेत्र से आदिकाल से जुड़ा हुआ है! प्राचीन सभ्यताओं के अवशेषों से प्राप्त प्राप्त होता है कि अति प्राचीन काल से हो रही कृषि भारतीय निवासियों की आजीविका का आधार रही है। 3000 से 5000 वर्ष ईसा पूर्व सिंधु घाटी की सभ्यता में कृषि कार्य संबंधी अनेक प्रमाण प्राप्त हुए हैं। जहां तक की कृषि का एवं मानव सभ्यता के आपसी इस प्रश्न का संबंध है यह तो एक ऐतिहासिक रूप से जुड़ा है जिसे अलग करना संभव नहीं है। यदि यह कहा जाए कि कृषि का इतिहास मानव सभ्यता का इतिहास है तो वास्तविक रूप में यह सही सिद्ध होगा। इसी कारण कृषि को सभी सभ्यताओं की जननी कहा गया है।, अर्थात् agriculture is the cultural of all cultures भारतवर्ष एक कृषि प्रधान देश है जिसकी 67% जनसंख्या खेती करके अपना जीवन निर्वाह करती है। यहां की जलवायु प्राकृतिक दशाएं तथा साधनों ने देश का सबसे अधिक आर्थिक विकास कृषि के आधार पर किया।

भारतीय जलवायु कृषि के लिए उचित होने के कारण लोगों ने सबसे पहले अपने जीवन जीने की खोज भूमि में अन्य पैदा करके की हैं।भारत में कृषि केवल एक धंधा ही नहीं है अपितु जीवन यापन की एक विशेष विधि के रूप में विकसित हुई है ।भारत में

कृषि सबसे महत्वपूर्ण उद्योग है यह देश के लोगों को भोजन देने के साथ-साथ कच्चे माल को भी उत्पन्न करती है। जिससे बड़े-बड़े उद्योग चलते हैं इसकी अतिरिक्त उद्योगों में रोजगार को वृद्धि रखने में यह बहुत सहायता करती है। विदेशी मुद्रा अर्जन ,विभिन्न योजनाओं की सफलता ,और राजनीतिक स्थायित्व भी कृषि पर निर्भर करते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि कृषि की प्रधानता राष्ट्रीय आय के मूल्य की दृष्टि से भी बहुत अधिक है ।कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का मेरुदंड है। जो विभिन्न रूपों में भारतीय अर्थव्यवस्था को सहारा प्रदान करती है ।भारतीय जीवन का आधार रोजगार का प्रमुख स्रोत तथा विदेशी मुद्रा का अर्जन के माध्यम होने के कारण कृषि को देश की आधारशिला कहा जाता है।

भारत के कुल क्षेत्रफल के लगभग 51% भाग पर कृषि कार्य होता है। स्वतंत्रता के समय सकल घरेलू उत्पाद में कृषि का योगदान 56.46 प्रतिशत था जो वर्ष 2016 और 17 में घटकर17.4 रह गया। कृषि व संबद्ध क्षेत्र के सकल मूल्य वर्धन में पशुओं की हिस्सेदारी वर्ष 2011- 12 से लगातार बढ़ रही है! जबकि फसल क्षेत्र की हिस्सेदारी कम हो रही है। कृषि क्षेत्र के योगदान में निरंतर कमी के कारण जीडीपी में सेवा क्षेत्र एवं उद्योग क्षेत्र का बढ़ना है। भारत में फसलों का वर्गीकरण भारतीय कृषि प्रणाली में वर्ष में मुख्ता तीन फैसले उगाई जाती हैं जो निम्नलिखित हैं:

1:- रवि की फसल:- यह सामान्य अक्टूबर नवंबर में होकर अप्रैल में तक काट ली जाती है, सिंचाई की सहायता से तैयार होने वाली इस फसल में मुख्यतः गेहूं, जो, चना, मटर ,सरसों, राय, आदि की कृषि की जाती !

2:-खरीफ की फसल :- यह वर्षा काल की फसल है! जो जून -जुलाई में वो कर सितंबर अक्टूबर तक काट ली जाती है !इसकी अंतर्गत चावल, ज्वार ,बाजरा ,राई ,मक्का, जुट, मूंगफली, कपास, पटसन, तंबाकू, मूंग, उड़द, लोबिया, आदि की कृषि की जाती है।

3:- जायद की फसल:- यह फसल रवि एवं खरीफ के मध्यवर्ती कल में अर्थात मार्च में बो कर जून तक काट ली जाती है ! इसमें सिंचाई के माध्यम से सब्जियां तरबूज, खरबूज, ककड़ी, खीरा, करेला ,आदि, की कृषि की जाती है। मूंग, उड़द, कुलथी ,जैसी ,दलहन फैसले ,भी इस समय उगाई जाती हैं

भारत का कृषि वर्ष 1 जुलाई से 30 जून तक माना जाता है ।भारतीय कृषि की प्राकृतिक सामाजिक एवं आर्थिक समस्याएं

भारतीय कृषि की समस्या मूलतः प्राकृतिक सामाजिक एवं आर्थिक कारणों से संबंधित हैं जिनका विवरण निम्न प्रकार है :

-1: वर्षा एवं सिंचाई की समस्या कृषि व्यवसाय के लिए समय अनुकूल पानी की आवश्यकता होती है। जिसकी पूर्ति वर्षा तथा सिंचाई के साधनों पर की जाती है। भारत में वर्षा की स्थिति अत्यंत अनिश्चित एवं अनियमित है। तथा वर्षा वर्ष में केवल चार महीने ही वर्षा होती है। निरंतर प्रयासों की बावजूद सिंचाई की साधनों की अभी भी पर्याप्त कमी दिखाई देती है। क्योंकि ऐसी स्थिति में भारतीय कृषि अनिश्चित हो जाती है।

भू स्वामित्व की दोषपूर्ण व्यवस्था:-

:-भारतीय कृषि की महत्वपूर्ण समस्या यहां दोषपूर्ण भू स्वामित्व व्यवस्था भी है ऐसी दोषपूर्ण व्यवस्था के अंतर्गत अनिश्चित का वातावरण तथा कृषि की उत्पादकता में वृद्धि के लिए उचित वातावरण नहीं बन सका! 4:-तकनीकी पिछड़ापन: -भारत की कृषि उत्पादन तकनीकी बहुत पुरानी एवं पिछड़े हुई है !

भारतीय कृषक उत्पादन की नवीनतम वैज्ञानिक तकनीकी का प्रयोग नहीं कर रहे हैं। क्योंकि उन्हें नई-नई तकनीकी का पूर्ण ज्ञान भी नहीं है कि किस प्रकार उन्हें उचित मात्रा तथा फसलों से संबंधित की खाद, बीज, जोतना, तथा बोना आदि को सही तरीके से किस प्रकार उपयोग करें। फसलों का सही हेर फेर तथा मिट्टी के गुणवत्ता के अनुरूप फसले उत्पन्न करने का तकनीकी ज्ञान भी अधिकांश कृषकों को नहीं है

!4:-भूमि में उर्वरा शक्ति की कमी:-भारत में प्राय सभी मृदा में उर्वरक तत्वों का अभाव पाया जाता है। देश में भू चरण(सॉइल एरोजन) तथा जल रिसाव से भी उर्वरा शक्ति का ह्रास हो रहा है। साथ ही हजारों वर्षों से निरंतर होने वाला कृषि उत्पादन भी भारतीय भूमि की उर्वरा शक्ति को कम करने के लिए जिम्मेदार है!

5:-पूंजी का अभाव एवं कृषक की ऋण ग्रस्त ता :-भारतीय किसान की गम्भीर समस्या उनका ऋण ग्रस्त होना है । उनकी आमदनी का अधिकांश भाग पुराने कर्ज तथा उसके ब्याज चुकाने में चला जाता है। इस ऋण के कारण ही किसानों को भूमि महाजनों के हाथ पहुंच रही है ।और किसान भूमिहीन होता जा रहा है। ठीक इसी प्रकार छोटी जोत अल्प आय एवं निर्धनता के कारण भारतीय किसान को सदैव पूंजी का अभाव रहता है। बैंक इत्यादि स्रोतों से पर्याप्त मात्रा में धन प्राप्त करने में कठिनाई रहती है पूंजी के अभाव में कृषि का पर्याप्त विकास नहीं हो पा रहा है।

6:-खाद और उर्वरकों का अभाव: -हमारे भारत देश में खाद बनाने तथा इसे खेतों में डालने की विधियां भी दोषपूर्ण हैं। जिसके कारण खाद की बहुत से पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं । देश में रासायनिक उर्वरकों का उत्पादन भी आवश्यकता से बहुत कम है तथा यहां उर्वरक काफी महंगे भी हैं। जिसके कारण भूमि को पर्याप्त मात्रा में उर्वरक और खाद नहीं मिल पाते हैं और ठीक से फसल उत्पादन किसानों को नहीं मिल पाता है।

8:-कृषि विपणन की दोषपूर्ण व्यवस्था: हमारे देश में कृषि के व्यापार पक्ष पर विशेष ध्यान नहीं दिया जाताहै जिसके परिणाम से कृषक अपने उत्पादन को उचित मूल्य पर नहीं भेज पाते हैं तथा कृषि उपज का वास्तविक लाभ कृषक को न प्राप्त होकर मध्यस्तों को प्राप्त होता है!

9:-यातायात एवं संचार सुविधाओं का अभाव: -अधिकांश ग्रामीण क्षेत्रों में सड़कों का संचार के साधनों का आभाव है गांव के कच्चे रास्ते वर्ष के दिनों में पानी और कीचड़ से भर जाते हैं जिसके परिणाम स्वरुप गांव का शहरों से संबंध टूट जाता है और फसल का मंडी तक लाना भी एक बड़ी समस्या बन जाती है।

10:-उचित कृषि नियोजन का अभाव:-कृषि सुधार की जो लंबी-लंबी योजनाएं बनाई गई हैं उनके कार्य के लिए जिन व्यापक संगठनात्मक तथा रचनात्मक परिवर्तनों की आवश्यकता थी उनकी उपेक्षा की गई। सिंचाई उर्वरक बीज आदि के क्षेत्र में जो प्रगति होने चाहिए थी वह नहीं हो सकी है। कृषि क्षेत्र की प्राथमिकताओं को सही निर्धारण तथा उनका ठीक से क्रियान्वयन नहीं हो सका है। जिससे किसानों की आर्थिक हालत में वांछित सुधार नहीं हो पाया है।

आधुनिक कृषि की प्रमुख विशेषताएं: :-1:-कृषि पर अधिक जनसंख्या आश्रित: _हमारे देश में विश्व के अधिकांश देशों के मुकाबले में अधिक जनसंख्या कृषि पर आधारित है जैसा की विभिन्न प्रकार की सर्वे और आंकड़ों के माध्यम से बताया जाता है संसार की विकसित देशों के मुकाबले में यहां बहुत अधिक जनसंख्या कृषि पर आश्रित होते हुए अपने जीवन का निर्माण करती है। उनके पास और कोई दूसरा साधन नहीं है। जैसे कि ऑस्ट्रेलिया में 5% कनाडा में 4% ग्रेट ब्रिटेन में 2% पश्चिम जर्मनी में 3% जापान में 9% और फ्रांस में 8% संयुक्त राज्य अमेरिका में 2% इजराइल में6% सोवियत संघ में 15% जनसंख्या खेती में लगी हुई है जबकि अकेले भारत में 52% जनसंख्या खेती में संलग्न है

2:-खदान फसलों की प्रमुखता:-भारत में कृषि योग्य भूमि में अधिकांश क्षेत्र में खदान फैसले उगाई जाती हैं। करीब 82% बोए गए क्षेत्रफल में खदान फसलों की बुवाई की जाती है।और फसल तैयार की जाती हैं

3:-छोटी और बिक्री हुई जोत भारत के अधिकतर क्षेत्रों में और भागों में छोटी जोत पाई जाती हैं। यहां 4.2 प्रतिशत जो होते हैं एक एकड़ से कम एक एकड़ से 5 एकड़ के बीच पांच एकड़ 10 एकड़ की बीच आदि जुटे देखने को मिलती हैं।

4:-कम पैदावार: -वैश्विक कृषि के संदर्भ में भारत की स्थिति वर्ष 2008 के अनुसार भारत में दूसरे देशों की तुलना में अभी भी पैदावार कम है कल खदान में भारत विश्व की 2525 मिलियन तन की अपेक्षा 267 मिलियन टन है जबकि विश्व में इसका स्थान चीन और अमेरिका के बाद तीसरा है। गेहूं उत्पादन में 79 मिलियन टन के साथ चीन के बाद दूसरा स्थान रखता है ।चावल में 148 मिलियन टन उत्पादन के साथ चीन के बाद दूसरा स्थान है।

पूरे विश्व में 21.6% उत्पादन का प्रतिनिधित्व करता है कल दलों की उत्पादन में 15 मिलियन तन भारत अकेले उत्पादन का पहला स्थान रखता है मूंगफली में चीन के बाद दूसरा रेप सेट में कनाडा और चीन के बाद तीसरा सब्जी एवं फल में भारत चीन के बाद दूसरा स्थान रखता है।

गन्ना में 348 मिलियन टन के साथ ब्राजील के बाद दूसरा स्थान रखता है ।चाय में 0.81 मिलियन टन चीन और तुर्की के बाद दूसरा स्थान रखता है! काफी में सातवां स्थान रखता है! और बढ़ती हुई जनसंख्या को देखते हुए अभी भी भारत की पैदावार कम है !¡जो की एक गंभीर समस्या है

5:-मानसून पर निर्भरता:-वर्षा के अनिश्चित और अनियमित तथा अपर्याप्त होने के कारण भारतीय कृषि को मानसून का जुआ कहा जाता है ।देश में 1951 से अब तक सिंचाई की सुविधाओं की उपलब्ध होने के बावजूद भी मानसून की निर्भरता में कोई उल्लेखनीय कमी नहीं आई है। अभी कुल कृषि भूमि का केवल 30% क्षेत्र ही संचित है और 70% असिंचित है।

:-रोजगार का अभाव: किसने और कृषि मजदूरों को खेती में पूरे वर्ष काम नहीं मिलता औसतन 150 से 270 दिन काम मिल पाता है जिसके वजह से उच्च स्तर पर बेरोजगारी को देखा जा सकता है।

7:-भारतीय किसानों में कृषि के आधुनिक ज्ञान का अभाव:-भारतीय किसान गरीब और अशिक्षित है। आज भी पुरानी कृषि पद्धति अपनाई हुए हैं और पुराने यंत्रों से खेती का कार्य कर रहे हैं इसलिए भारतीय कृषि की विशेषता वैज्ञानिक विधियों से खेती न करना आदि शामिल है! अगर देखा जाए तो पता चलता है कि भारतीय किसान आदमी किस के अभाव की वजह से कृषि में उत्पादकता में बहुत ज्यादा कमी देखने को मिलती है साथ-साथ विभिन्न प्रकार की तकनीकी ज्ञान के अभाव के कारण फसल उत्पादन में जो वृद्धि दर है वह काफी कम है!

10:-कृषकों की संगठन का अभाव:::-उन उद्योगों की तरह कृषि व्यवसाय संगठन नहीं है !भारतीय किसान धर्म व जाति के नाम पर अनेकों में बैठा हुआ है संगठन के अभाव में किसानों का अनेक प्रकार से उत्पन्न तथा शोषण किया जा रहा है! भारतीय कृषि की कुछ आधुनिक समाधान एवं सुझाव:

1:-जैविक खेती2:-कृषि संरचना में फसल परिवर्तन 3:-फसल विभुतिकरण के दायरे में बागवानी क्षेत्र4:-स्थाई टिकाऊ खेती5:-देश की 52 फ़ीसदी कृषि योग उर्वरा भूमि के अपरदन को रोकने के उपाय7:-कृषि की आधुनिक नवीन तकनीकी का प्रयोग योजनाएं8:-अधिक उपज देने वाली फसलों की सफलता सिंचाई की सुविधाओं पर निर्भर9:-फसलों की समर्थन मूल्य में असुंतलन 10:-कर्ज की कारण किसानों की आत्महत्या11:-ज्योत का आकार कम होना12:-खदानों की खेती को अपनाना।13:-अच्छे बीजों का अभाव14:- पर्यावरणीय समस्याएं 15:-प्राकृतिक आपदाएं16:- मिट्टी का अधिकतम क्षरण17:-जल आपूर्ति की अनिश्चितता 18: किसानों की उत्पादकता में कमी 19:-मशीनीकरण का अभाव20:- परिवहनअसुविधा 21:-भंडारण सुविधाओं का अभाव22:- कृषि भूमि का आसमान वितरण

कृषि को प्रोत्साहित करने वाली कुछ योजनाएं। 1:-विकेंद्रीकृत अधि प्राप्ति योजना 2:-किसान क्रेडिट कार्ड योजना3:-कृषि क्लिनिक और कृषि व्यवसाय योजना4:-राष्ट्रीय जल नीति5:-, किसान कॉल सेंटर योजना6:-राष्ट्रीय वर्षा पोषित क्षेत्र प्राधिकरण7:-राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन8:-राष्ट्रीय लघु सिंचाई मिशन9:-मौसम आधारित फसल बीमा योजना!

भारतीय कृषि को बेहतर बनाने के लिए कई सुझाव निम्नलिखित हैं जिनका समाधानिक रूप में देखा जा सकता है!:-

नंबर 1:-कृषि से जुड़े क्षेत्रों में निवेश बढ़ाना, कृषि संचार, परिवहन सिंचाई ,अनुसंधान ,ग्रामीण बाजार, ग्रामीण बुनियादी ढांचा ,और खेतों में निवेश बढ़ाना चाहिए! नंबर 2:-कृषि नीतियों में बदलाव करना कृषि से जुड़ी मौजूदा आर्थिक नीतियों में बदलाव करने की जरूरत है !नंबर 3:- न्यूनतम मूल्य समर्थन MSP प्रणाली को मजबूत करना MSP प्रणाली का धारा बढ़ाना चाहिए !नंबर4:- किसानों को उत्पादों को बाजार तक पहुंचाना किस उत्पादों को बाजार तक पहुंचाने के लिए आपूर्ति श्रृंखला विकसित करनी चाहिए! नंबर 5:-भूमि सुधार करना जमींदारी प्रथा को खत्म करने के लिए भूमि को स्वामित्व किसानों को दे देना चाहिए! नंबर 6 :-कृषि उत्पादकता बढ़ाने के लिए सहकारी समितियां और मंडियां बनानी चाहिए! नंबर 7:- कुटीर और लघु उद्योगों को बढ़ावा मिलना चाहिए! नंबर 8:- राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना लागू की जानी चाहिए! नंबर 9 :-भूमि कटाव को रोकने के लिए

ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाने चाहिए नंबर 10 :-किसने की आधुनिक कीटनाशक खरपतवार नाशक और शक नाशक का इस्तेमाल करना चाहिए!

संदर्भ

1:-कृषि प्राकृतिक संसाधन अर्थशास्त्र परिचय प्रबंधन का परिचय प्रोफेसर हर शरण दास

2:-कृषि भूगोल राकेश शर्मा

3: कृषि एक भौगोलिक अध्ययन श्रीमती पलक भारद्वाज.

4:-statatisticalHand book Hathras 2014.

5:-chohan,D S(1966) studies in utilization of Agriculture Land

6 A GRICULTURE GEOGRAPHYSD KOSSIK

7 B.L SHARMA AGRICUL TURE GEOGRAPHY AGRA 1990

8 B.K SINGH GORAKHPUR ARIGATION AND RULAR DOVELOPMENT